भारत में क्षेत्रीय सिनेमा

Prabhat Kumar, Research Scholar, Department of Mass Communication & Journalism, Tezpur University, Assam

Pawan Kumar Pandey, Assistant Professor(Contract), Vinod Bihari Koylanchal University, Dhanbad

Abstract

भारत अत्यंत विविधताओं वाला देश है. यहाँ अलग अलग जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषाई पहचान वाले लोग एक साथ निवास करते हैं. चूँकि सिनेमा समाज का दर्पण है इसीलिए भारतीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों में यह साफ़ साफ़ झलकता है.क्षेत्रीय सिनेमा खास इसलिए है कि इसमें वहाँ की संस्कृति के दर्शन होते हैं. अगर किसी को गुजराती, मारवाड़ी, संथाली, मैथिली, नेपाली, डोगरी या मलयालम संस्कृति को समझना हो तो उसके लिए सिनेमा से अच्छा माध्यम भला क्या हो सकता है? बात सिर्फ़ संस्कृति तक सीमित नहीं अपितु अगर आपको उस क्षेत्र के प्रमुख मुद्दे या वहाँ के सामाजिक ताने बाने को समझना हो तो इसे क्षेत्रीय सिनेमा से अच्छे ढंग से कोई नहीं बता सकता. जब हम भारतीय सिनेमा की बात करते हैं तो अमूमन इसे हिंदी सिनेमा या बॉलीवुड से जोड़ कर देखा जाता है जबकि ऐसा बिलकुल भी नहीं है. यह बात सच है की बॉलीवुड की लोकप्रियता ज्यादा है पर भारत की अन्य भाषाओं में बनने वाली फ़िल्में इनसे किसी भी मामले में कम नहीं. इस पेपर में हम भारत में क्षेत्रीय सिनेमा की स्थिति पर चर्चा करेंगे. उनमें हाल के वर्षों में आ रहे बदलाव को समझने की कोशिश करेंगे. क्षेत्रीय सिनेमा तेज़ी से बदल रहा है. उदारीकरण(1991) के बाद से देश में एक नए मिडिल क्लास का उदय हुआ है जिसकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं ज्यादा बेहतर है. यह अपनी अपनी भाषाओं में अच्छा कंटेंट चाहता है. अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के कारण सिनेमा सेक्टर में आर्थिक निवेश बढ़ा है जिसके फल स्वरुप सिनेमा में भारी बदलाव आया है.टेक्नोलॉजी, पिक्चर क्वालिटी, एनीमेशन जैसे हर छोटे बड़े पहलू में वर्ल्ड क्लास लेवल पे काम किया जा रहा है. अलग अलग भाषाओं में हाल के वर्षों में कई बेहतरीन फ़िल्में आ रही हैं. बाहुबली जैसी फिल्म तेलुगु भाषा में बनी जो हॉलीवुड की फिल्मों से किसी मामले में कम नहीं. इस पेपर में हम इन्हीं पहलुओं पर चर्चा करेंगे.

Key words: क्षेत्रीय सिनेमा, हिंदी सिनेमा, नए मिडिल क्लास का उदय, उदारीकरण

Introduction

भारत विविधता में एकता वाला देश है. हजारों वर्षों से यहाँ कई तरह की संस्कृतियाँ एक दूसरे के साथ मिल जुलकर रहती आई हैं. मौजूदा समय में भारतीय संस्कृति का जो रूप हमें देखने को मिलता है वह इसी का सम्मिलित रूप है.

"हेथाय आर्य , हेथा अनार्य , हेथाय द्राविड़ -चीन,

शक-हूण-दल, पाठान-मोगल एक देहे हलो लीन ।

रणधारा बाहि, जय गान गाहि , उन्माद कलरवे,

भेदि मरु-पथ, गिरि-पर्वत यारा एसे छिलो सबे ।"

महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर की इस बंगाली कविता का भावार्थ यह है कि भारत रुपी महासमुद्र में आर्य हैं, अनार्य हैं, द्रविड और चीनी भी हैं , शक, हूण, पठान और मुग़ल न जाने कितनी ही जातियों के लोग इस देश में आये और सबके सब एक ही शरीर में शमा कर एक हो गए। समय समय पर जो लोग रण की धारा बहाते हुए और उन्माद और उत्साह में विजय के गीत गाते हुए रेगिस्तान को पार कर एवं पर्वतों को लांघकर इस देश में जो जो लोग आये उनमें से अब किसी का अलग अस्तित्व नहीं है। संगीत, कला जैसी कई विधाएँ हैं जिनमें भारत की सामासिक संस्कृति का रूप दिखता है. ऐसी ही एक विधा है भारतीय सिनेमा.

क्षेत्रीय सिनेमा किसी भी क्षेत्र विशेष की संस्कृति को जानने समझने का सबसे सरल एवं लोकप्रिय माध्यम है जिसमें मनोरंजन और उस संस्कृति से परिचय साथ साथ होता जाता है. भारत जैसे विशाल देश में अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में फ़िल्में बनती हैं. तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़, मराठी, भोजपुरी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, असमिया आदि. लेकिन ये फ़िल्में सिर्फ़ उसी क्षेत्र या भाषा वर्ग के लोगों तक सीमित नहीं रहतीं. टेक्नोलॉजी के प्रसार ने और ग्लोबलाइजेशन के कारण ये फ़िल्में पूरी दुनिया में देखी और पसंद की जाती हैं. बदलते समय के साथ फिल्मों के विषय वस्तु में भी भारी बदलाव आया है. भारत में जब सिनेमा की शुरुआत हुई उस वक़्त बनने वाली फ़िल्में अक्सर धार्मिक, पारिवारिक या ग्रामीण जीवन के इर्द गिर्द केन्द्रित रहती थीं लेकिन जैसे जैसे समय बदलता गया वैसे वैसे फिल्मों के विषय बदलते गए. आज सिनेमा में टेक्नोलॉजी का जितना उपयोग हो रहा है इससे पहले कभी इतना नहीं हुआ. भाषा की समस्या भी नहीं रही. एक ही फिल्म को डबिंग करके कई भाषाओं में एक साथ रिलीज़ किया जा सकता है.

फिल्म विश्लेषक अनुपमा चोपड़ा कहती हैं- "पिछले 5 सालों को देखें पिछले 5 सालों को देखें तो बॉलीवुड से बाहर की फिल्मों ने फार्मूला ध्वस्त कर दिया जैसे पिछले साल 'कुंबलंगी नाइट्स', 'वायरस' आई थी. तमिल में देखें तो 'सुपर डीलक्स' देखकर लगता है कि वह हिंदी सिनेमा में तो हमने ऐसा कुछ देखा ही नहीं कुछ साल पीछे जाएं तो 'बाहुबली' उसने तो अलग कीर्तिमान ही रच दिया. इन सब फिल्मों में कॉमन चीज है कि यह सब बॉलीवुड से बाहर की फिल्में हैं. ऐसा नहीं कि हिंदी सिनेमा में अच्छा काम नहीं हुआ पर जो भी फिल्में सोच के बाहर थी वह सब बाहर बन रही है आप टॉप फाइव इंडिया का बॉक्स ऑफिस देखे तो सिर्फ एक ही हिंदी फिल्म है दंगल वह भी चौथे पायदान पर पहली और दूसरी पर है बाहुबली" (दैनिक भास्कर, 11 सितंबर 2020).

तेलुगु सिनेमा

सन 1931 में बनी भक्त प्रह्लाद तेलुगु भाषा की पहली बोलती फिल्म थी. तेलुगु सिनेमा में फीचर फिल्म बनाने की शुरुआत रघुपति वैंकेया ने की. उन्हें तेलुगु सिनेमा का पिता कहा जाता है. 1921 में उन्होंने पहली फिल्म 'भीष्म प्रतिज्ञा' बनायी. तब से लेकर आज तक तेलुगु सिनेमा ने लंबी दूरी तय की है.तेलुगु सिनेमा में कई धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों पर फ़िल्में बनाई गयी हैं. ऐतिहासिक और मिथक कहानियों पर आधारित फिल्मों का तेलुगु सिनेमा में विशेष स्थान है. हाल के दिनों में आये बाहुबली, मगधीरा (2009), अरुणधति (2009), ईगा (2012) और धमारुकरम (2012) फिल्मों में उत्कृष्ट विजुअल इफेक्ट्स का प्रभाव रहा है. तेलुगु फिल्म के प्रसिद्ध अभिनेताओं में प्रभाष, रामचरण,अल्लू अर्जुन, महेश बाबू, विजय देवराकोंडा हैं तो वहीं सामन्ता, तमन्ना, अनुष्का और काजल अग्रवाल जैसी अभिनेत्रियां काफ़ी लोकप्रिय हैं. अतीत में N T रामा राव, चिरंजीवी, नागार्जुन आदि ने काफी प्रसिद्धि पाई. तेलुगु सिनेमा का दर्शक वर्ग काफी विस्तृत है.विश्व में जहाँ जहाँ तेलुगु भाषी लोग फैले हुए हैं वहाँ वहाँ ये फ़िल्में देखी जाती हैं. अपने एक्शन सीन के लिए मशहूर इन फिल्मों को कई भाषाओं में डबिंग करके खूब देखा जाता है. हाल में आई फ़िल्म बाहुबली ने हर रिकॉर्ड को तोड़ दिया. कमाई के मामले में इसने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया. इसने क्षेत्रीय सिनेमा को पहचान दी और ये बताया की अच्छी फिल्म किसी भी भाषा में बनाई जा सकती है. दक्षिण भारतीय सिनेमा के बारे में हैदराबाद यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर इ सत्यप्रकाश कहते हैं कि दक्षिण भारत का सिनेमा लोगों को कुछ देर तक हकीकत की जिंदगी से दूर कर काल्पनिक दुनिया में ले जाता है. सिनेमा एक तरह से उनकी जिंदगी के मनौवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा करता है.

तमिल सिनेमा

भारत में पहली फिल्म मुंबई में 1912 में 'राजा हरिश्चंद्र' बनी. इसी के ठीक चार साल बाद 1916 में पहली तमिल फिल्म 'कीचकवधम' बनी. दोनों ही फिल्में भारतीय पौराणिक ग्रंथों पर बनी थी. मद्रास में पहला फिल्म स्टूडियो 'इंडियन फिल्म कंपनी' के रूप में शुरू किया गया. इस स्टूडियो के साथ ही दक्षिण भारतीय फिल्मों की शुरुआत हो गयी. दक्षिण भारतीय फिल्मों में सर्वप्रथम तमिल फिल्म इंडस्ट्री कालांतर में इतनी मजबूत हुई कि श्रीलंका की फिल्में भी मद्रास में बनती थी. तमिल सिनेमा का वहाँ के लोगों के जीवन पर अत्यंत गहरा असर है. यह इस बात से समझ सकते हैं की वहाँ की पूरी राजनीति ही सिनेमा के इर्द गिर्द घूमती है. M G रामचंद्रन, जयललिता, करूणानिधि जैसे दिग्गज नेता फिल्म जगत की ही उपज थे जिनकी फ़िल्मी छवि ने राजनीति में उन्हें स्थापित करने में बड़ा योगदान दिया और वे कई वर्षों तक वहाँ के मुख्यमंत्री रहे.

तमिल फिल्मों में विजय सेतुपति, धनुष और कार्ती जैसे अभिनेता व तृषा, नयनतारा और अनुष्का ने हाल के दस सालों में खास छाप छोड़ी है. अपने अच्छी कहानी की बदौलत इन फिल्मों का दर्शक वर्ग विशाल है. 2017 में आये सस्पेंस थ्रिलर फिल्म 'थीरन' में कार्ती और रकुल प्रीत सिंह ने भूमिका निभायी. फिल्म काफी सराही गयी. वहीं अन्य महत्वपूर्ण फिल्मों में 'अरण्यर कांड' है. इस फिल्म में मुख्य भूमिका संपत ने निभायी. पिछले एक दशक की बात की जाये तो जिन तमिल फिल्मों की खास चर्चा रही. उनमें 'सुपरडिलक्स', 'विसरानी',

'पेरणाबु' और 'अरूवी'जैसे मर्मस्पर्शी फिल्म बने. तमिल सिनेमा जिन संवेदनशील मुद्दों को अपनी फिल्मों को कथावस्तु बनाता है और जिस सहजता के साथ लोगों के सामने पेश करता है उसकी तुलना में दूसरी क्षेत्रीय सिनेमा नहीं कर पाती है. तमिल फिल्मों की सफलता के कई कारण हैं. एक तो इनकी नींव काफी पहले रखी गयी थी.दूसरी यह कि तमिल भाषा की बड़ी आबादी सिंगापुर, मलेशिया और अमेरिका जैसे जगहों में रहती है. वहां के पैसों से इंडस्ट्री काफी मजबूत हुई है. तमिल प्रवासी समुदाय काफी साधन संपन्न है. ये प्रवासी समुदाय जब बाहर जाते हैं, तो इनके पास अपने मनोरंजन और क्षेत्र से जुड़ने का बड़ा साधन फ़िल्में ही होती हैं.

मलयालम सिनेमा

मलयालम फिल्मों का जन्म रंगमंच से हुआ है. रंगमंच कलाकार के डब्लयू जोसेफ ने पहली बार 1913 में 'जोस इलेक्ट्रिक बॉयोस्कोप' में मलयालम फिल्में दिखायी. इसके बाद केरल में फिल्म उद्योग की जमीन तैयार होने लगी. वर्ष 1928 में पहली मलयालम फिल्म 'विज्ञातकुमारम' बनी. तब से मलयालम फिल्मों का सफर जारी है. 1950 के बाद से मलयालम सिनेमा ने रफ्तार पकड़ना शुरू किया और पूरे देश में इसे सराहा जाने लगा. इसमें 'जीवीत नौका' और 'नीलाकिऊल' प्रमुख है. इन फिल्मों ने राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार भी हासिल किया. मलयालम फिल्में शुरुआत में मद्रास में बना करती थी लेकिन बाद में ये तिरूअनंतपुरम में बनने लगीं और अब काफी हद तक कोच्चि फिल्म निर्माण का हब बन चुका है. मलयालम फिल्में, मलयालम साहित्य से प्रेरित हैं. इस वजह से उनकी कथावस्तु गंभीर होती है और लोगों के वास्तविक जीवन के करीब होती है एवं संस्कृति और समाज से गहरे ढंग से जुड़ी रहती हैं. .

गल्फ(खाड़ी) देशों में जैसे दुबई, सऊदी आदि जो मलयाली रहते हैं, काम करते हैं उनके बीच ये फ़िल्में खूब देखी जाती हैं. केरल में वामपंथी विचारधारा की वजह से ज्यादा रियलिस्टिक फिल्में बनी है. वहां सिनेमा के सहारे राजनीति में घुसना आसान नहीं रहा है. मलयालम फिल्मों में जहां एक ओर अदूर गोपालकृष्णन जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक रहे हैं, वहीं प्रियदर्शन जैसे फिल्मकार भी रहे हैं जो गंभीर कहानियों के साथ – साथ हास्य फिल्मों के निर्देशन में सिद्धहस्त रहे हैं. प्रसिद्ध हिंदी फिल्म 'हेराफेरी' मलयालम फिल्म 'रामजी राव' का रीमेक रहा है, जिसका निर्देशन प्रियदर्शन ने किया है. अकसर मलयाली फिल्मों की इस बात को लेकर आलोचना होती है कि इन फिल्मों की कहानी काफी धीमी रहती है और बाहर के दर्शकों के समझने में दुरूह होती है. मलयालम फिल्मों के संगीत की सराहना पूरी दुनिया में होती है. इलैयाराजा और के जे येशुदास जैसे गायकों की राष्ट्रीय पहचान रही है. अगर पिछले एक दशक की बात की जाये तो कुछ फिल्में काफी चर्चित रही हैं. इनमें 'उस्ताद होटल', 'प्रेमम',बैंग्लोर डेज''दृश्यम' और 'मुंबई पुलिस' रहे हैं. मोहनलाल, ममूटी आदि की फ़िल्में काफी लोकप्रिय हैं.दिलीप, अनिल ममूथी, मोहनलाल और सुरेश गोपी आदि कुछ प्रसिद्ध मलयाली अभिनेता हैं. वहीं मेडोना सेबेस्टियन, अमला पॉल, कीर्ति सुरेश, अनुपमा परमेश्वरन और रेवती आदि प्रसिद्ध मलयालम अभिनेत्रियां.

कन्नड़ सिनेमा

कन्नड फिल्म उद्योग की पहली बोलती फिल्म 'सती सुलोचना' थी. यह 1934 में बनी. कन्नड़ फिल्में साहित्य पर आधारित रहती.एक ओर जहाँ यू आर अनंतमूर्ति जैसे साहित्यकार हुए. वहीं दूसरी ओर गिरीश कर्नाड और गिरीश कासावल्ली जैसे फिल्मकार भी हुए जिन्होंने कन्नड़ सिनेमा के पटकथा पर ज्यादा जोर दिया. मलयालम फिल्मों की तरह कन्नड़ फिल्मों में प्रयोगधर्मी फिल्में ज्यादा बनी है. 70 और 80 के दशक में कन्नड़ फिल्मों के अभिनेता राजकुमार काफी लोकप्रिय हुए. कर्नाटक की फिल्म इंडस्ट्री को सैंडलवुड के नाम से भी जानते हैं. दक्षिण भारत के तीन राज्यों की तरह कन्नड़ की फिल्म इंडस्ट्री उतनी विकसित नहीं है. पिछले दो – तीन दशकों में यह अन्य तीन तमिल, तेलुगु और मलयालम से पिछड़ने लगी है. खासतौर से 2000 – 2010 का दशक कन्नड फिल्म इंडस्ट्री कुछ खास नहीं कर पाया. इसके पीछे वंशवाद भी एक बड़ी वजह मानी जाती है. कभी कंटेट के लिए अपना पहचान बनाने वाली कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री तमिल, तेलगु और मलयालम फिल्मों का रीमेक बनाने लगी है. तेलुगु फिल्म के बाहुबली के तरह ही कन्नड़ फिल्मों का 'केजीएफ' ब्लॉकबस्टर फिल्म साबित हुआ है. एक साल में इसके 52 रीमेक बनने लगे. हालांकि कनन्ड फिल्मों के दिन फिर जल्द घूमने शुरू हो गये. यह इंडस्ट्री काफी हद तक मलयालम फिल्म इंडस्ट्री जैसी ही है. कन्नड़ फिल्में जो पिछले एक दशक में सर्वाधिक चर्चित रही है उनमें केजीएफ (2018), लूसिया (2013) , रंगनीतरंगा (2015) और तिथि (2015) जैसी फिल्में हैं. कन्नड़ फिल्म इंडस्ट्री में दर्शकों के बीच रक्षिथ शेट्टी, पुनीथ राजकुमार, सुदीप, यश वहीं अभिनेत्रियों में रश्मि मंदाना, श्रद्धा श्रीनाथ और रचिता राम जैसी अभिनेत्रियां लोकप्रिय हैं.

पंजाबी सिनेमा

अगर पंजाबी फिल्म उद्योग की बात की जाये तो पहली फिल्म 1928 में 'डॉटर्स ऑफ टूडे' आयी. वहीं पहली साउंड फिल्म 'हीर – रांझा' थी जो 1932 में बनी.. पंजाब का फिल्म उद्योग अमृतसर में स्थित है. आजादी से पूर्व पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री लाहौर में थी. आज पंजाबी

फिल्मों की शूटिंग कनाडा, ब्रिटेन समेत कई देशों में होती है. बॉलीवुड में पंजाबी कलाकारों का लम्बे समय से बोलबाला रहा है. राजकपूर, देवानंद, बी आर चोपड़ा और यश चोपड़ा, दिलीप कुमार, के एल सहगल, नूरजहां और मोहम्मद रफी से लेकर कई ऐसी हस्तियां हैं जो यहाँ से निकलीं. शहीद ए मोहब्बत बूटा सिंह (1999),देश हो या परदेस(2004), मेल करादे रब्बा(2010), जिने मेरा दिल लुट्या (2011), जाट & जूलिएट (2012) आदि फ़िल्में खूब सराही गयी. जिमी शेरगिल, गुरदास मान, दिलजीत दोसांझ आदि की फ़िल्में काफी लोकप्रिय हैं.पंजाबी समुदाय का एक बड़ा वर्ग प्रवासी और साधनसंपन्न है. पंजाबी समुदाय कनाडा अमेरिका ब्रिटेन आदि में भारी संख्या में जा बसा वहां पर काफी धन कमाया. यह वर्ग अपनी मातृभाषा में फ़िल्में देखना व गाने सुनना चाहता है यही कारण है आज कल पंजाब में म्यूजिकल वीडियो काफी लोकप्रिय हो रहे हैं. फ़ोल्क साँग में गुरदास मान का बड़ा नाम है वहीं आजकल पंजाबी पॉप साँग की बाढ़ सी आई हुई है कई पंजाबी सिंगर इसमें अपना कैरियर बना रहे हैं. कई पॉप सिंगर व रैप सिंगर पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में हाल के वर्षों में उभरे हैं. गुरु रंधावा, बादशाह, हनी सिंह आदि लोगों के म्यूजिक विडियो खूब देखे जाते हैं . इन पॉप गीतों और म्यूजिक विडियो में धन का प्रदर्शन अत्यधिक होता है. अमीरों की जीवन शैली, बड़ी कारें ,महंगे कपड़े, शराब, नशा, लग्जरी गाड़ियां, अपार्टमेंट और पैसे का दिखावा चरम पर देखने को मिलता है.

भोजपुरी सिनेमा

भोजपुरी भाषा की पहली बोलती फिल्म थी गंगा मैय्या तोहे पियरी चढैबो जो 1963 में बनी. भोजपुरी भाषा में शुरुआत के दिनों में बनी फ़िल्में मुख्यतः ग्रामीण परिवेश और पारिवारिक जीवन को केंद्र में रख कर बनाई गईं. गंगा, हमार भौजी, गंगा किनारे मोरा गाँव आदि इसके उदाहरण हैं. 1982 में आई फिल्म नदिया के पार काफी लोकप्रिय हुई आज भी इसे अक्सर टीवी पर प्रसारित किया जाता है. फिल्म में ग्रामीण जीवन में रसे बसे एक परिवार के आंतरिक ताने बाने को सुन्दरता से व्यक्त किया गया था. बाद की भोजपुरी फिल्मों में राज्य से बाहर की ओर पलायन का दर्द साफ़ दिखता है. भारत में भोजपुरी मुख्यतः बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बोली जाती है. इन हिस्सों में न सही ढंग से विकास हो पाया और न ही रोजगार मिला इस कारण यहाँ से महानगरों की ओर होने वाला पलायन एक कड़वी सच्चाई है और भोजपुरी फिल्मों में यह खूब झलकता है. चूँकि भोजपुरी भाषा का क्षेत्र काफी व्यापक है. अतः भारत के बाहर गुयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी, मौरीसस, दक्षिण अफ्रीका आदि में भी ये फ़िल्में देखी जाती हैं. यहाँ पर ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विषयों पर बनी फिल्मों का अभाव झलकता है. फिल्मों की संख्या अधिक है पर विषयों का वैविध्य नहीं है. कंटेंट के लेवल पर काफी काम करने की जरुरत है. बिहार और उत्तर प्रदेश के वैसे लोग जो काम के सिलसिले में महानगरों की ओर पलायन कर गए हैं उनके बीच यह सिनेमा काफी लोकप्रिय है. उनके मनोरंजन का सबसे अच्छा और सस्ता स्रोत है. आज कल स्मार्ट फ़ोन की कीमत कम और इंटरनेट डाटा सस्ता होने के कारण मोबाइल पर भोजपुरी फ़िल्में भारी संख्या में देखी जाती हैं. मनोज तिवारी, रविकिशन, खेसारीलाल यादव, दिनेशलाल यादव निरहुआ, पवन सिंह आदि कुछ प्रसिद्ध अभिनेता हैं तो वहीं अक्षरा सिंह,मोनालिसा, आम्रपाली दूबे आदि प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ.

बंगाली सिनेमा

बंगाली भाषा में बनी पहली बोलती फिल्म थी- जमाई षष्ठी (1931).बंगाली सिनेमा की सबसे बड़ी हस्ती हैं सत्यजीत रे. उनकी फ़िल्में पूरी दुनिया में देखी जाती हैं. 1955 में बनी पाथेर पांचाली को खूब सराहा गया. नागरिक(1952), अपू ट्राइलॉजी (1955–1959), जलसाघर (1958), अजांत्रिक (1958), नील आकाशेर नीचे (1959), देवदास(1960) आदि उनकी कुछ मशहूर फ़िल्में हैं. फिल्म देवी में एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण मुद्दे को छुआ गया. बंगाल में देवी की पूजा कई सालों से प्रचलित है, पर रे की यह फिल्म परंपरा के सामने कुछ सवाल खड़े करती है मुख्यतः स्त्री अधिकारों को लेकर के. सत्यजीत रे की कुछ फ़िल्में बच्चों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुईं और आज भी देखी जाती हैं जैसे सोनार केला (1974), जय बाबा फेलूनाथ (1978) आदि. 1952 से 1975 के काल को बंगाली सिनेमा के स्वर्णिम दौर के रूप में याद किया जाता है. यह सत्यजीत रे, मृणाल सेन और ऋत्विक घटक का काल. इस समय में बनी उत्तम कुमार और सुचित्रा सेन की जोड़ी अत्यंत ही हिट रही. बाद के बंगाली सिनेमा में कम्युनिस्ट प्रभाव खुलकर देखने को मिलता है खासकर मृणाल सेन की फिल्मों में. इसका मुख्य कारण ये था की बंगाल में वामपंथी शासन बड़े लम्बे समय तक रहा. समानान्तर सिनेमा या आर्ट सिनेमा में यह प्रभाव स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है. कला, संस्कृति और सिनेमा की अगर बात की जाए तो बंगाल इसमें काफी आगे दिखता है. हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के कई कलाकार आज भी यहीं से आते हैं. इसके एक कारण है कि कलकत्ता में आधुनिकता का आगमन भारत में सबसे पहले हुआ जब भारतीय संस्कृति का संपर्क अंग्रेजी संस्कृति से हुआ.यह एक बड़े महानगर के तौर पर उभरा जहाँ समूचे पूर्वी भारत के लोग रोजगार की तलाश में आते थे. अमार बंधु राशिद(2011), बाईसे श्रावण(2011) , बूनो हांस (2014), आई लव यू (2007), चैंपियन (2003)

आदि हाल में आई लोकप्रिय फ़िल्में हैं. प्रसेनजीत चटर्जी , देव, जीत , कोयल मल्लिक , शुभो श्री चटर्जी, ऋतुपर्ण आदि मशहूर एक्टर के तौर पर उभरे हैं.

मराठी सिनेमा

यह भारत का सबसे पहला सिनेमा उद्योग है. पहली मराठी फिल्म 'श्री पुंडलिक' दादासाहेब तोरने के द्वारा 1912 में बनाई गयी. राजा हरिश्चंद्र जो की भारत की पहली फिल्म है वह भी मराठी भाषा में ही थी और 1913 में बनी.वहीं पहली मराठी बोलती फिल्म थी 'अयोध्येचा राजा' जो 1932 में बनी. 1937 में प्रभात फिल्म कंपनी के द्वारा बनी फिल्म 'संत तुकाराम' को वेनिस फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट फिल्म का अवार्ड मिला. धीरे धीरे बंबई हिंदी सिनेमा का केंद्र बनता गया. महाराष्ट्र में होते हुए भी मराठी सिनेमा उतना फल फूल नहीं पा रहा था जबकि हिंदी सिनेमा का काफी विस्तार हुआ. चूँकि हिंदी फ़िल्में पूरे देश में देखी जाती थीं इस लिहाज़ से इसका मार्केट काफी बड़ा था वहीं दूसरी ओर इसका नुकसान मराठी फिल्मों को हुआ. उनका मार्केट ख़त्म हो गया. हिंदी सिनेमा से जुड़े कलाकारों को पैसा ज्यादा मिलता था और काम भी ज्यादा मिलता था. उनकी फिल्में ज्यादा चलती थी, लोग ज्यादा देखने आते थे, पूरे भारत भर से दर्शक थे यही कारण रहा कि मराठी सिनेमा पीछे छूटने लगा. हाल फिलहाल में मराठी टेलीविज़न ज़ी मराठी, स्टार प्रवाह आदि के कारण मराठी सिनेमा को विस्तार मिला है. हाल फिलहाल में कई अच्छी फ़िल्में बनी हैं. साईंराट(2016), नटरंग(2009) .

असमिया सिनेमा

असम उत्तर पूर्व का सबसे बड़ा राज्य है. यहाँ की संस्कृति का प्रभाव पूरे उत्तर पूर्व में देखने को मिलता है.असमिया सिनेमा की शुरुआत 1935 में मानी जाती है जब कवि, लेखक, संगीतकार एवं स्वाधीनता संग्राम में बड़ी भूमिका निभाने वाले ज्योति प्रसाद अग्रवाल ने जॉयमती फिल्म बनाई. यह फिल्म लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ जिन्हें मॉडर्न असमिया साहित्य का पिता कहा जाता है, उनके एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक पर बनी थी और 17 वीं सदी में अहोम वंश की राजकुमारी के जीवन पर आधारित थी.दुर्भाग्य की बात यह है कि यह फिल्म आर्थिक रूप से असफल रही क्योंकि गुवाहाटी में सिनेमाहॉल ना होने के कारण इसे कोलकाता में रिलीज करना पड़ा. अग्रवाल ने चित्रलेखा मूवी टोन की स्थापना की. तेज़पुर,जिसे असम की सांस्कृतिक राजधानी कहा जाता है वहाँ उन्होंने फिल्म की शूटिंग करने के लिए चित्रलेखा उद्यान बनाया. इस उद्यान को एक फिल्म सिटी की तरह अत्यंत खूबसूरत बनाया गया. उनकी दूसरी फिल्म थी इन्द्रमालती जो 1939 में आई.

बाद के वर्षों में इसमें धीमी गति से प्रगति हुई. जानू बरुआ और डॉ भूपेंद्र नाथ सैकिया का योगदान उल्लेखनीय रहा है. डॉ भूपेन हजारिका ने 1961 में शकुंतला नाम की फिल्म बनाई.फिल्म को कई पुरस्कार मिले. भूपेन हजारिका की फिल्मों की खासियत उनके गए गए मधुर गीत हैं जो असम के जीवन के अलग अलग रंगों को समेटे हुए हैं. बीहू गीतों से लेकर ब्रह्मपुत्र तक अलग अलग विषयों पर. बाद में इसी महत्वपूर्ण योगदान के लिए डॉ भूपेन हजारिका को भारत रत्न से सम्मानित किया गया.

हाल ही में आई रीमा दास की फिल्म विलेज रॉकस्टार्स काफी चर्चा में रही.इस फिल्म में असम में जब हर साल बाढ़ आती है तो क्या भयावह स्थिति होती है और असम के ग्रामीण जीवन का बड़ी ही खूबसूरती से चित्रण किया गया है. बहुत ही कम लागत में बनी इस फिल्म को वर्ष 2018 में भारत से ऑस्कर के लिए भेजा गया. यह असमिया और पूरे नार्थ ईस्ट के सिनेमा जगत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी. रीमा दास की एक अन्य फिल्म बुलबुल कैन सिंग भी बहुत चर्चा में रही है .

हाल फिलहाल में इस फिल्म उद्योग ने बड़ी वापसी की है. एक के बाद एक कई फ़िल्में हैं जिन्होंने अच्छी कमाई की है. रामधेनु, मिशन चाइना, कंचनजंघा, रत्नाकर आदि कुछ ऐसी ही फ़िल्में हैं. जुबिन गर्ग मौजूदा दौर के सबसे लोकप्रिय अभिनेता हैं.

नार्थ ईस्ट में

नॉर्थ ईस्ट इंडिया के अन्य राज्यों में भी थोड़ी बहुत फ़िल्में बनी हैं लेकिन इनकी संख्या कुछ ज्यादा नहीं. मणिपुर की पहली फिल्म 1972 में बनी इसका नाम था 'मातमगी मणिपुर'.खासी भाषा में भी कुछ फिल्में बनी हैं. हाल फिलहाल में ही सिक्किम में बनी फिल्म 'पहुना' काफी चर्चा में रही. लेकिन सच्चाई यह है कि सिर्फ असम और मणिपुर में ही लगातार फिल्में बनती हैं.चूँकि सिनेमा बनाने में लागत ज्यादा लगती है तो इसकी बजाय छोटे छोटे म्यूजिक वीडियो नॉर्थ-ईस्ट के राज्यों में अलग अलग भाषाओं में खूब बन रहे हैं आजकल और उन्हें यूट्यूब पर रिलीज किया जा रहा है. आजकल डिजिटल कैमरे सस्ते हो जाने के कारण कई लोग शॉर्ट फिल्म और डॉक्यूमेंट्री आदि भी बना रहे हैं

लेकिन नॉर्थ ईस्ट की फिल्मों में फंडिंग और बजट की कमी साफ देखी जा सकती है. एक मणिपुरी फिल्म के लिए 10-15 लाख और एक असमिया फिल्म के लिए 50 लाख बहुत है. हाल ही में प्रसिद्ध गीतकार जुबीन गर्ग के द्वारा बनाई गई फिल्म 'मिशन चाइना' जो 1 करोड़ की लागत से बनी यह अब तक की नॉर्थ ईस्ट में बनने वाली सबसे महंगी फिल्म है. नार्थ ईस्ट की एक बहुत बड़ी दिक्कत यह है कि यहां पर फिल्म स्क्रीन करने के लिए थिएटर, स्क्रीन और सिनेमाघरों की कमी है कुछ ऐसे भी राज्य हैं जहां पर सिनेमा हॉल है ही नहीं.एक और बड़ी समस्या यह है कि नॉर्थ ईस्ट में बहुत ज्यादा विविधता है, अलग-अलग समुदायों की भाषा और संस्कृति बिल्कुल अलग है वहां किसी एक भाषा में अगर फिल्म बनाई जाती है तो वह दूसरे भाषा वाले लोगों के द्वारा देखने में कठिनाई होगी इसीलिए दर्शक वर्ग काफी छोटा हो जाता है

दूसरी कठिनाई यह है कि ये गांव और जनजातियां इतने दुर्गम इलाकों में बसी हैं कि वहां पर जाकर फिल्मों को दिखाना संभव नहीं है. हालाँकि स्मार्ट फ़ोन आ जाने के बाद यह समस्या हाल होती दिखती है.सितंबर 2000 में रिवॉल्यूशनरी पीपल्स फ्रंट के द्वारा मणिपुर में हिंदी फिल्मों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था जिस कारण से इंफाल में स्थित अधिकांश सिनेमा हॉल बंद हो गए इसका वहां के लोकल फिल्म मेकर्स ने बेहतरीन फायदा उठाया. उन्होंने कम लागत पर फिल्में बनाई और जनता के बीच प्रदर्शित किया.

Conclusion

भारत में फिल्म उद्योग को जब हम देखते हैं तो यह पाते हैं कि जिन क्षेत्रों में बॉलीवुड का दखल ज्यादा है यानी हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की फिल्में जहां पर ज्यादा देखी जाती हैं वहां पर की जो क्षेत्रीय फिल्में हैं उनका मार्केट बिल्कुल नहीं है. हिंदी बेल्ट यानी जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार ,झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में क्षेत्रीय सिनेमा का वैसा विकास देखने को नहीं मिलता है इसका मूल कारण ये हो सकता है कि हिंदी का प्रभाव इतना ज्यादा है की लोग उसी भाषा में सिनेमा भी देखते हैं.

ऐसे राज्य जो मूलतः भाषा के आधार पर बने जैसे तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम आदि वहाँ पर क्षेत्रीय सिनेमा या कहें तो भाषाई सिनेमा काफी लोकप्रिय है. खास करके दक्षिण भारत के केस में तो यह फार्मूला शत प्रतिशत लागू होता है. दक्षिण के राज्यों में हिंदी विरोध का आन्दोलन चलाया गया और कई राज्यों की पूरी राजनीति ही इसी पर टिकी हुई है.क्षेत्रीय सिनेमा के मामले में दक्षिण भारत सबसे आगे दिखता है. तकनीक हो या पूँजी का निवेश हर मामले में काफी प्रगति हुई है. फिल्मों का कंटेंट भी बहुत बेहतर दिखता है दूसरे क्षेत्रीय फिल्मों की बनिस्पत. साइंस, टेक्नोलॉजी, फिक्शन आदि पर भी खूब फ़िल्में बन रही हैं और देखी जाती हैं.हैदराबाद, चेन्नई, बैंगलोर जैसे महानगर होने से काफी फायदा मिला है साउथ की इंडस्ट्री को.

उदारीकरण(1991) के बाद से देश में एक नए मिडिल क्लास का उदय हुआ है जिसकी आर्थिक स्थिति पहले से कहीं ज्यादा बेहतर है. यह अपनी अपनी भाषाओं में अच्छा कंटेंट चाहता है. वह इसके लिए पैसे खर्च करने को तैयार है यही कारण है कि अमेज़न प्राइम(Amazon Prime) और नेट फ्लिक्स(Netflix) जैसे नए माध्यमों पर रीजनल कंटेंट खूब लोकप्रिय हो रहा है. डोगरी हो, गढ़वाली हो, हरयाणवी या हिमाचली इनमें म्यूजिक एल्बम बनाने का चलन इंटरनेट आने के बाद काफी बढ़ा है. कई स्थानीय कलाकारों ने अपनी पहचान बनाने में कामयाबी हासिल की है. देश में कई अन्य फिल्म उद्योग भी हैं जहाँ अलग अलग भाषाओं में फ़िल्में बन रही हैं जैसे गुजराती, हरयाणवी, नागपुरी, गढ़वाली आदि. कुछ ऐसे भी इलाके जहाँ कोई खास प्रगति नहीं दिखती. उदाहरण के लिए अच्छे लोकेशन और बेहद आकर्षक संस्कृति के बावजूद कश्मीर की क्षेत्रीय भाषा में उतनी फिल्में नहीं बनीं. इसका प्रमुख वजह वहां की राजनीतिक परिस्थितियां और आतंकवाद रहा है. 1989 के बाद से बॉलीवुड फिल्मों पर अघोषित रूप से बैन लग गया था. 90 के दशक में वहाँ पर सिनेमाघरों में पाबंदी लगा दी गयी.

आज कई ऐसी भाषाएँ हैं जो विलुप्त होने के कगार पर हैं जैसे गोंड, संथाली, छोटानागपुरी , कुडुख, मुंडारी आदि. कई ऐसी भी भाषाएँ हैं जिनके बोलने वालों की संख्या काफी कम हो चुकी है.क्षेत्रीय सिनेमा बनाने से इन भाषाओं के विकास में सहायता मिलेगी. इसका एक उदाहरण हिंदी सिनेमा है जिसके कारण अहिन्दी इलाकों में भी कई लोगों ने सिनेमा देखते देखते ही हिंदी सीख ली.

आज हम देखते हैं ग्लोबलाइजेशन के कारण पूरी दुनिया में किसी एक प्रकार की संस्कृति पूरी दुनिया में हावी हो रही है वह चाहे हॉलीवुड की संस्कृति हो या पॉप कल्चर हो या अंग्रेजी गाने हो या हिंदी फिल्मी गाने हो इसकी इसका खामियाजा क्षेत्रीय सिनेमा को भुगतना पड़ा है क्षेत्रीय संगीत,साहित्य, भाषाओं को भुगतना पड़ा है. क्षेत्रीय भाषा साहित्य संस्कृति को बढ़ावा देने की जरूरत है क्योंकि यह सिर्फ भाषा

या सिनेमा की बात नहीं यह पूरी एक पहचान से जुड़ी है अगर किसी भाषा में साहित्य, संगीत आदि खत्म हो जाए तो वह पूरा जो जनसमुदाय उससे जुड़ा है वह बिल्कुल खत्म हो जाएगा.

कैमरे अब इतने महंगे नहीं हैं. मोबाइल में भी कैमरे आ जाते हैं. स्पीकर और बहुत से अन्य उपकरण जो फिल्म बनाने के लिए जरूरी थे वह काफी सस्ते हो चुके हैं और घर-घर तक पहुंच चुके हैं. इंटरनेट के आने से संभावनाएँ काफी बढ़ी हैं. ऑनलाइन माध्यम से वीडियो रिलीज़ करना बहुत आसान हो गया है तो बस अगर कोई फिल्म अगर कोई बनाना चाहता है क्षेत्रीय भाषा में और उसे रिलीज करना चाहता है तो उसे दर्शक भी आसानी से यूट्यूब पर मिल जाते हैं. आज जरुरत इस बात की है कि भारत की अलग-अलग भाषाओं में कंटेंट तैयार हो. धारावाहिक, सीरियल, फिल्में बनाई जाएं.

References-

S Theodore Baskaran, History through the lens - Perspectives on South Indian Cinema

Cinemas of South India: Culture, Ideology, Resistance - Sowmya Dechamma (Editor), Sathya Prakash (Editor)

Film remakes as cross-cultural connections between North and South: A case study of the Telugu film industry's contribution to Indian filmmaking - C S H N Murthy

https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/Indian-film-industrys-f ascination-for-the-wood-suffix/articleshow/19835293.

https://theculturetrip.com/asia/india/articles/the-rise-of-regional-cinema-in-india/

https://en.wikipedia.org/wiki/Cinema_of_West_Bengal

https://www.filmykeeday.com/best-punjabi-movies/

दैनिक भास्कर, 11 सितंबर 2020.

https://indianexpress.com/article/north-east-india/assam/now-streaming-regional-cinema-from-the-northeast-5319806/

https://indianexpress.com/article/north-east-india/five-films-northeast-you-should-watch-film-making-5008744/

http://indpaedia.com/ind/index.php/North-Eastern_cinema

https://www.firstpost.com/entertainment/cinema-of-the-northeast-from-early-assamese-films-to-star-manipuri-directors-all-you-need-to-know-4109699.html